15

अनुराधा

301hi15

भारतीय समाज निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है, परंतु जिस गति से मानव ने भौतिक विकास किया है, उस गति से उसमें जागरूकता विकसित नहीं हुई है। यही कारण है कि हम आज भी अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारा युवा तथा किशोर वर्ग आज विशेष रूप से दिशाविहीन है। पुराने जीवन-मूल्यों का विघटन हो रहा है तथा नए जीवन-मूल्यों का विकास हो नहीं पाया है, इसी कारण यह वर्ग बीच में पिसता हुआ अनिर्णय की स्थिति में पहुँच जाता है। कभी-कभी विरोधी स्थितियों में जीते-जीते ऐसे ही उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। परंतु क्या यह जीवन-शैली उचित है?

आइए, प्रस्तुत पाठ में एक कहानी पढ़ते हैं जिसकी मुख्य नायिका 'अनु' अपने जीवन की विषम परिस्थितियों में किस प्रकार का जीवन बिताने का निर्णय लेती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत कहानी को पढ़ने के बाद आप

- मिथकों और भ्रांतियों को दूर करके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे;
- प्रजनन व यौन स्वास्थ्य से संबंधित विषयों के बारे में जागरूक हो सकेंगे;
- दैनिक जीवन में आनेवाली संभावित समस्याओं के प्रति सावधान हो सकेंगे;
- सही समय पर निर्णय न लेने के परिणाम बता सकेंगे;
- एड्सग्रस्त परिवार और समाज के बीच के संबंधों पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- भारतीय परिवार में नारी की स्थिति और उसके संघर्ष की विवेचना कर सकेंगे;
- यौन स्वास्थ्य-शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे;
- 'अनुराधा' कहानी का सार बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

समस्याओं से जूझते वर्तमान समाज में हम किसी से भी यह उम्मीद नहीं कर सकते कि

टिप्पणी

वह सदा ही हमारी समस्याओं को सुलझाने आगे आएगा अथवा हमारा सहारा बनेगा। पुरुष हो या नारी, उसे स्वयं अपना निर्णय लेने में सक्षम होना है। उसे इतना जागरूक बनना है कि अपने भविष्य में संभावित कष्टपूर्ण स्थितियों से स्वयं के बचाव के रास्ते निकाल सके।

क्या आपने अपने सुखद भविष्य के लिए कुछ इस प्रकार की तैयारी की है? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए–

1. .....

2. .....

3. .....

15.1 मूलपाठ

अनुराधा

आइए, सबसे पहले मूल कहानी को पढ़ लेते हैं–

यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से में आता है। निर्बल के लिए तो कर्त्तव्य और सिर्फ दायित्व ही आते हैं। इसीलिए मैंने आज अपना सारा बल समेट लिया है। शेष जो बच गया है, उसे भी बटोर लेना चाहती हूँ; क्योंकि मैं अपना वजूद सुरक्षित चाहती हूँ। मैं जीना चाहती हूँ क्योंकि सृष्टि के इस अजस्र प्रवाह में मेरा भी कहीं कोई अंश है, मेरी भी अपनी कोई भागीदारी है। मैं आज इस सृष्टि से अपना हिस्सा, अपना जीने का अधिकार चाहती हूँ– इसमें अस्वाभाविक क्या है? क्या जीवन एक सहज-सामान्य प्राणी का सहज अधिकार नहीं?... यदि 'योग्यतम' को ही यहाँ जीवन-रक्षा का अधिकार है, तो मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अपने आपको 'योग्यतम' सिद्ध करूँगी।

विजय मेरे पति, अब नहीं रहे। बड़ी घृणास्पद और भयावह बीमारी से मौत हुई थी उनकी–एड्स से। वे ही जानें कि कहाँ से ढोकर लाए थे यह बीमारी–किसी सैलून में हजामत बनवाते वक्त या फिर...? किसी डॉक्टर से सुई लगवाते समय या...? मैं तो सिर्फ़ इतना जानती हूँ कि उनकी बीमारी के लिए मैं कहीं से दोषी नहीं थी, किंतु उसके सारे दुष्परिणाम, भय, घृणा–यहाँ तक कि संक्रमण भी मुझे ही झेलने पड़े थे। विजय पुरुष थे, मेरे स्वामी थे और मैं उनके जन्म-जन्मांतर की 'दासी'।

सोचती हूँ, देह का प्रश्न यदि स्त्री की मान-मर्यादा से जुड़ता है तो क्या विवाह-वेदी पर बैठकर औरत अपनी मान-मर्यादा अपने पति के हाथों गिरवी रख देती है? यदि 'पति' होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है? क्यों करे कोई स्त्री अपने पति का 'स्वामित्व स्वीकार? इस 'दासत्व' का प्राप्य?

शहर की बी.ए. (ललित कला) पास लड़की मैं पिता की इच्छा और हैसियत के मुताबिक बीस-इक्कीस बरस की उम्र में ब्याहकर इस घर में आई थी। विजय शहर में नौकरी करते थे और शहर के करीब आठ-दस कि.मी. के निकटवर्ती गाँव बेगमपुर के अपने पुश्तैनी मकान से शहर आया-जाया करते थे। मैं चाहती थी कि मैं ललित कला को अपना कैरियर बनाऊँ और प्रसिद्धि पाऊँ, लेकिन माँ की ज़िद थी कि ब्याह के बाद

शब्दार्थ

सष्टि	–	संसार
अजस्र	–	सदा, हमेशा
घ णास्पद	–	घ णा योग्य
एड्स (एक रोग)	–	एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएसी सिन्ड्रोम
दासत्व	–	गुलामी
प्राप्य	–	प्राप्त करने योग्य
संक्रमण	–	फैलने वाला रोग
निकटवर्ती	–	निकट के, पास के

टिप्पणी

लड़की को घर सँभालना चाहिए और फिर जब मर्द कमा रहा हो तो औरत को काम करने की क्या ज़रूरत?

ब्याहकर मैं विजय के पुश्तैनी आवास में ही गई थी। गाँव-गँवई का पक्का मकान! बीच में आँगन, चौतरफ़ा बने कमरे तथा आँगन के चौतरफ़ा बड़े-बड़े गोल खंभोंवाले दोहरे बरामदे। मकान तो पुराना नहीं था, लेकिन उसकी बनावट पुराने ढंग की थी। आँगन के पूरब की ओर के एक कमरे में अम्माजी अर्थात् विजय की माँ रहती थीं। अम्मा के कमरे के ठीक सामने दोहरे बरामदे और आँगन को पार कर एक दोहरा बरामदा पड़ता था, जिसके पार एक कतार में बने कमरों में से एक कमरा विजय और मुझे रहने के लिए दिया गया था।

दिन अच्छे ही बीत रहे थे। विजय घर के बड़े लड़के थे, मैं बड़ी बहू। विजय का ब्याह बड़े अरमानों के साथ किया गया था और मैं बहुत चुन-छाँटकर, बड़े स्नेह के साथ बहू बनकर इस घर में आई थी। विजय सहृदय और प्रणयी पुरुष थे, कम-से-कम मुझे तो उन दिनों ऐसा ही लगता था। मैंने भी यथासंभव इस घर और विजय के प्रति अपने समर्पण में कोई कमी न आने दी। लोग कहते थे–विजय और अनुराधा की जोड़ी चाँद-सूरज की जोड़ी है।

मगर इस जोड़ी को जल्द ही ग्रहण लग गया। घर में दो साल बीतते-न-बीतते मैंने अनुभव किया, अम्मा थोड़ी चिंतित हो रही थीं और मेरे प्रति उनका मान भी थोड़ा घट रहा था, किंतु अम्मा को कैसे बतलाती कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं था। अव्वल तो मैं अभी माँ बनने से डरती थी और दूसरे विजय भी इतनी जल्दी बच्चा नहीं चाहते थे। फिर भी मैंने विजय से इशारा किया, जिसे वे हँसकर टाल गए।

लेकिन हमारी असली परेशानी तो विजय की बीमारी को लेकर शुरू हुई। पहले गाँव के हेल्थ सेंटर, फिर शहर के डॉक्टर और राजधानी तक का इलाज। अंततः डॉक्टर ने घोषित कर दिया–विजय का एच.आई.वी. पॉजिटिव है। डॉक्टर ने हमें ढेर सारी हिदायतें दीं और खासकर मुझे विजय से बचे रहने की सलाह दी। विजय की केस हिस्ट्री तैयार करके डॉक्टर ने हमें एक लंबा प्रिसक्रिप्शन थमाते हुए कहा–'इन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाइए। मैंने लिख दिया है।'

हमारे चेहरे विवर्ण हो उठे थे। हम घर लौट आए। घर से बाहर दूसरे शहर के अस्पताल जाने की न तो हमारी तत्काल मानसिकता थी और न वह इतना तुरत-फुरत संभव था।

विजय को तो जैसे साँप सूँघ गया था। वे अपने कमरे में बिछे पलंग पर एकाकी पड़े थे। मैं कमरे के कोने में बैठी थी और घर के बाकी व्यक्ति उस लंबे आँगन, उस चौड़े-दोहरे बरामदे के काले-कोसों में बने अज्ञात गुफानुमा कमरों में निःशब्द सिमटे हुए थे।

विजय ने किसी भी दूर-दराज़ के अस्पताल में जाने से साफ़ इनकार कर दिया था। कहा था, 'मैं जानता हूँ, मेरा रोग लाइलाज है। मैं किसी खैराती अस्पताल की प्रयोगशाला में मेंढक की भाँति प्रयोग झेलते हुए एक खैराती मौत क्यों मरूँ? मैं यहीं रहूँगा, यहीं मरूँगा– अपने घर में, अपने लोगों के बीच।'

दूसरी ओर अजय थे, विजय के छोटे भाई। उनका कहना था– 'संक्रामक रोग है, जान लेवा है। एक आदमी की इच्छा के आगे पूरा घर तबाह क्यों हो? क्यों झेलें दूसरे लोग

शब्दार्थ

प्रणयी	–	प्रेम करने वाला, अनुरागी
विवर्ण	–	उदास
हिस्ट्री	–	इतिहास, अतीत
प्रिसक्रिप्शन	–	चिकित्सक द्वारा किसी रोग के निदान संबंधी लिखा गया दवाइयों का ब्योरा
एकाकी	–	अकेलापन
निः शब्द	–	शांत, बिना शब्द के, आवाज रहित

संक्रमण का यह भय, मृत्यु का यह अभिशाप?

अंततः अजय घर छोड़ गए। उन्हें अपनी चिंता थी, अपने भविष्य की चिंता थी, अपने सामाजिक सरोकारों की चिंता थी... असंख्य चिंताएँ थीं, जिनसे जुड़कर अजय ने निकटवर्ती शहर के यथासंभव दूर के छोर पर किराए के एक घर में रहना शुरू कर दिया और जल्द ही गृहस्थी बसा ली।

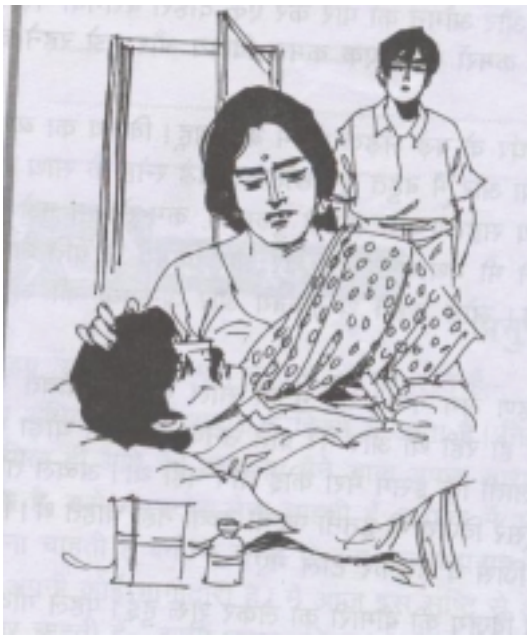

चित्र 15.1

रह गए अम्मा-बाबूजी। वे कहाँ जाते? बड़ा-सा घर, जैसे हमारे लिए प्रेतों का वास बन चुका था। पूरी दुनिया, भाई-बिरादरी के लिए हमारा घर घृणा का पात्र बन चुका था। विजय के रोग की बात दावानल की तरह फैली थी। कोई हमारे नज़दीक न फटकता था, मानो घर से गुज़रनेवाली हवा भी दूसरों को संक्रमित करती हो। लिहाज़ा, बाबूजी अपने कमरे में यथासंभव तटस्थ पड़े रहते और अम्मा लंबे-चौड़े आँगन के दोहरे बरामदों को पार कर अपने कमरे में कैद हो गई थीं।

...और मैं विजय के कमरे में छोड़ दी गई। आखिर मेरे सिवा उनकी सेवा करता कौन? अग्नि और विश्वकर्मा को साक्षी मानकर जीवन-मरण के प्रति साथ प्रतिबद्ध हुए थे। सभी विजय को छोड़ गए, मगर मैं कैसे छोड़ देती?...झूठ नहीं कहूँगी, मृत्यु का भय और उससे बढ़कर इस बीमारी का भय तो मुझे भी आक्रांत करते थे; किंतु मेरे संस्कारों और सामाजिक मर्यादाओं के भय मेरे उस मृत्यु-भय पर भारी पड़ते थे। मैं सोचती-पढ़–लिखकर भी मैं संस्कार-भ्रष्ट नहीं हुई। त्याग, सेवा, पति-प्रेम जैसे भारतीय नारी-सुलभ मूल्य आज भी मुझ जैसी सुशिक्षिता, आत्मचैतन्य स्त्री को थामे हुए हैं। सच कहूँ, कभी-कभी तो मैं अहंकार भाव से भी भर उठती थी।

लेकिन जल्द ही मेरे अहंकार, मेरी इन आत्ममुग्धताओं से मेरी निष्कृतियों का दौर भी प्रारंभ हुआ। डॉक्टर की चेतावनी के बावजूद मैं विजय के कमरे में ही सोती थी–इसी आठ बाई नौ के डबल बेड पर, ताकि विजय एकाकी न महसूस करें। रात ढल रही थी, खाना जैसा भी हम खा सकते थे, खा लिया था। विजय पलंग के एक ओर पड़े हुए करवटें बदल रहे थे और दूसरे छोर पर मैं असाध्य व्यथा से भरी हुई जाग रही थी।

अनायास ही विजय के हाथ मेरे बालों को सहलाने लगे थे। मैंने अपनेपन से भरकर सांत्वना के भाव से उन हाथों को थाम लिया। हाथ गरम थे; जाहिर था, उन्हें बुखार था। मैंने चरम व्यथा और करुणा से भरकर विजय की गरम हथेलियों को अपने चेहरे और तकिए के बीच में रखकर दबा लिया। मन में आया, चीख-चीखकर रोऊँ।

शब्दार्थ

प्रतिबद्ध	– बँधा हुआ, वचन बद्धता
आक्रांत	– जिस पर हमला किया गया हो, अभिभूत
संस्कार भ्रष्ट	– संस्कारों से हटकर चलना
आत्मचैतन्य	– स्वयं का बोध
आत्ममुग्धता	– अपने गुणों पर स्वयं खुश होना
निष्कृति	– छुटकारा, मुक्ति
असाध्य	– जो साधन योग्य न हो, लाइलाज
व्यथा	– दुख
अनायास	– अचानक

टिप्पणी

न जाने कब मेरी आँखों से अश्रुधार बह निकली। उससे विजय की हथेलियाँ गीली हो उठी थीं। विजय अपने स्थान से खिसककर और भी निकट आ गए थे। उन्होंने अपनी रुग्ण हथेलियों से मेरे चेहरे को स्पर्श करते हुए गौर से देखा, फिर मेरे आँसू पोंछकर कहा, 'तुम इस तरह रोती हो तो मुझ पर क्या बीतती है उसे तुम समझ पाती हो? मैं जानता हूँ कि मेरी मृत्यु निश्चित है; किंतु मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं जितने दिन भी जी सकूँ, मृत्यु-भय से मुक्त होकर जी सकूँ...। मैं अपनी मौत के दिन गिनना नहीं चाहता, अनु। मैं जीना चाहता हूँ' और आँसू थमने की बजाय और भी प्रवाहमान हो उठे। विजय की व्यथा भी जैसे घटने की बजाय मेरे आँसुओं से और अधिक तीव्र हो उठी। कैसी विचित्र परिभाषा थी प्यार की। विजय कहते–''मेरी जो थोड़ी-बहुत ज़िंदगी बची है, मैं उसमें तुम्हें अधिक-से-अधिक प्यार देना चाहता हूँ। एक बच्चा तुम्हें दे जाऊँ, जो मेरे बाद तुम्हारा संबल हो सके।''

...किंतु मैं तो जैसे अपने आँसुओं के सैलाब में स्वयं ही डूबती जा रही थी, बेसुध। विजय ने अपने उत्तप्त आलिंगन में मुझे बाँध लिया था।

दूसरे दिन घर के पिछवाड़े से लगे छोटे बगीचानुमा खंड में अम्माजी ने मुझे घेरकर कहा, 'विजय से भागा न करो, दुलहिन। यही तो औरत का धरम है। पति जैसा चाहे वैसा करना पड़ता है। इसी में औरत का इहलोक और परलोक दोनों है।'

अम्मा की बातों से मुझे किसी साहित्यिक पत्रिका की वह पंक्ति स्मरण हो चली–जिस्म के मकान को हमेशा सजा-धजाकर रखना चाहिए, चाहे उसका मालिक कैसा भी हो। मैं कैसे समझाती अम्माजी को कि 'औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी है।'

दिन बीत रहे थे, ऐसे ही घृणा-प्रेम, दया-क्रोध, जीवन-मृत्यु, रोग-शुश्रूषा के द्वंद्व में। विजय प्रतिदिन छीजते जा रहे थे। अब न तो उनके पास उनकी वे आक्रामक मुद्राएँ बची थीं, न वैसी उद्दाम दैहिक वासना। धीरे-धीरे उनका बिस्तर से उठ पाना भी मुश्किल हो रहा था।

और विदाई की वह घड़ी भी सामने आ गई। घोर काली रात्रि थी। बिजली गुल थी। विजय के पास अकेली मैं बैठी थी। आज सुबह से ही अचेत विजय के गले से घर्र-घर्र की आवाज़ आनी शुरू हो गई थी। बाबूजी विजय की हालत देखकर शाम को ही अजय को लिवा लेने शहर चले गए थे।

क्रमशः विजय के कंठ से घर्र-घर्र को ध्वनि क्षीण होते-होते बंद हो गई। मैंने उनके मुँह के पास कान सटाकर सुना, उनकी छाती पर सिर रखकर सुना, उनकी पतली कलाइयों को थामकर सुना–सभी मौन थे।

तब मैं रोना चाह रही थी, चीख-चीखकर रोना चाह रही थी। विजय के जाते ही मैं जैसे भार-मुक्त हो उठी थी, भय-मुक्त थी। मेरे कंठ में बहुत दिनों से जो रुलाई अटकी पड़ी थी, आज वह भी मुक्त हो जाना चाह रही थी।

मैं विजय की लाश को वहीं छोड़ लंबा आँगन, चौड़ा बरामदा पार कर अम्मा के कमरे तक गई और बाहर से आवाज़ दी, 'अम्माजी। देखिए!...ज़रा चलकर देखिए।'

शब्दार्थ

अश्रुधारा	– आँसुओं की झड़ी
मत्यु–भय	– मरने का डर
प्रवाहमान	– न रुकना, बहते जाना
उत्तप्त	– तपित, बड़ा हुआ ताप
उद्दाम	– बंधन हीन स्वतंत्र
दैहिक वासना	– देह की वासना
आक्रामक	– घायल करने वाली
भार मुक्त	– बोझ से मुक्ति
भय मुक्त	– डर से मुक्ति

टिप्पणी

अम्माजी शायद जगी हुई ही बैठी थीं– 'क्या हुआ?...चला गया विजय?'

अम्मा जी आवाज़ बिलकुल ठंडी थी, प्रेत-ध्वनि की भाँति सन्नाटे भरी। पर जब समय को लकवा मार जाता है तब सन्नाटा स्वयं चीखने-चिल्लाने लगता है। अम्मा भी भीतर से ज़रूर चीख रही होंगी।

आगे-आगे मैं चली, पीछे-पीछे अम्मा। अम्मा ने पास जाकर विजय की नब्ज टटोली, धड़कनें आँकीं, देह को छुआ और लंबी श्वास लेकर कहा, 'चला गया।' मानो प्रेत बोले।

अम्मा ने स्थिर स्वर में मुझे आदेश दिया, 'उसकी छाती पर गिरकर नहीं रोना दुलहिन, बच्चे को मिरगी के दौरे आएँगे। जो चला गया, सो चला गया, उसे तो सहेजना होगा ना, जो बच गया है।' अम्मा शायद होने वाले बच्चे के लिए चिंतित थीं।

पर मैं क्या बची हुई न थी? मुझे सहेजने की चिंता किसी को नहीं थी।

शब्दार्थ

प्रकरण – प्रसंग
अभियान – दल सहित किसी कार्य के लिए चल पड़ना, चढ़ाई कर देना
आवेषित – जोश में
एकवस्त्रा – एक वस्त्र में
आवेष्टित – ढकी हुई

सवेरे अजय आए–अपनी पत्नी करुणा और बाबूजी के साथ। अन्य कोई नहीं था हमारे इर्द-गिर्द। पड़ोसी तो दूर की बात, सगे-संबंधी भी विजय की बीमारी की असलियत जानकर साथ छोड़ गए थे।

अंतिम संस्कार व अन्य क्रिया-कर्म जैसे-तैसे पूरे हुए, मगर इस सारे प्रकरण में मैं तटस्थ रही। मानो मैं तमाशबीन हो उठी थी। भोक्ता तो भोक्ता, कर्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था। मगर हाँ, जहाँ ज़रूरत पड़ी, मैंने हाथ लगाया।

अंततः यह अभियान पूरा हुआ...लेकिन नहीं। अभी मैं बाकी थी। मैंने स्पष्ट सुना कि मुझे स्नान-गृह का एकांत छोड़कर नहर पर जाकर खुले में स्नान करना होगा।

...हमारे घर के पिछवाड़े, गाँव के बाहर लगभग आधा किलोमीटर दूर नहर बहती थी। अम्माजी और मैं उधर ही चल दिए। अम्माजी के हाथ में सफ़ेद-सी धोती थी–विजय को ओढ़ाए जाने वाले कफ़न से ज़रा-सी अलग–जो मुझे पहननी थी। नहर का रास्ता मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं था। इससे पहले मैं सिर्फ़ एक बार नहर पर आई थी, आज से लगभग चार वर्ष पूर्व। तब नई-नई ब्याही इस गाँव में आई थी। ब्याह के चौथे दिन चौथारी नहाने की वह परंपरागत रस्म थी। रंगीन कपड़ों और दमकते गहनों में लिपटी थी, सजे-सँवरे विजय खुश थे, रंग-बिरंगी पोशाकों में सजी-धजी गाँव-रिश्ते की तमाम औरतें थीं, आगे-आगे ढोल बजाता ढोलकिया था, चुहल करते गाँव के छोटे-छोटे बच्चे थे, पीछे-पीछे झूमर गाती औरतें थीं और उस झुंड में भीतर-भीतर हुलसती, लजाई चाल से चलती थी मैं। अथाह गर्व और आनंद से दीप्त चेहरेवाले विजय थे।

मुझसे दस कदम की दूरी पर अम्मा चली आ रही थीं–मौन। आज की इस शाम में धरती पर से किरणों का सुनहला मजमा उठ चुका था। एक उदास कालिमा से वसुंधरा **आवेष्टित** थी। आकाश में उड़ते पंछियों का क्रमशः मौन होता कलरव विदा के शोक-गीत गा रहा था।

स्नान के बाद अब इधर सफ़ेद धोती लपेट, शृंगारविहीन एकवस्त्रा मैं घर लौटी तो जैसे एक दूसरी 'अनुराधा' हो चुकी थी। फिर भी मेरे भीतर की 'अनु' विजय और उनके साथ

टिप्पणी

बिताए गए अतीत के क्षणों को पल-पल अपने तृप्त निःश्वास के रूप में मेरे सामने उछाल देती। घर लौटते-लौटते राह की हवाओं में मेरे बाल लगभग सूख चुके थे और अब धीरे-धीरे हवा में उड़ रहे थे मेरे 'रेशमी' बाल।

मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे के अस्तित्व में आ जाने की घोषणा के साथ अजय ने इस बात पर बल दिया था कि जिस लेडी डॉक्टर की देख-रेख में मैं हूँ, उसे विजय की बीमारी के बारे में बतलाकर अनुराधा भाभी और उनके होनेवाले बच्चे को तो खतरे से बचा लिया जाए। किंतु न तो अम्मा उस पक्ष में थीं, न ही बाबूजी। मैंने साहस जुटाकर दबी ज़बान अम्माजी से कहा था, 'डॉक्टर को सब कुछ बताकर मेरी एच.आई.वी. जाँच भी करवा लेनी चाहिए।

अम्मा ने कड़ी नज़रों से देखते हुए कहा, 'फायदा? मान लो कि यदि मेरे बेटे का रोग तुम्हें लग ही चुका है, तो भी क्या उसका इलाज संभव हो सकेगा?'

क्रोध के बावजूद मैंने पाया कि अम्माजी के तर्क में दम था। मैं ठीक-ठाक तो आज भी नहीं जानती कि यदि एक बार किसी का एच.आई.वी. पॉजिटिव निकल आए तो उसका इलाज हो पाता है या नहीं, किंतु यह बात मुझे भली-भाँति मालूम थी कि जिस व्यक्ति का एच.आई.वी. पॉजिटिव हो, वह सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में घृणा का पात्र बन जाता है। उस बात को मैंने विजय की बीमारी में अच्छी तरह अनुभव कर लिया था। मेरे लिए तो इतनी घृणा झेलते हुए जी पाने की कल्पना भी दुस्सह थी। फिर एक भारी अंतर यह था कि विजय पुरुष थे और मैं स्त्री। पुरुष होने के बावजूद उन्हें उपेक्षा और घृणा का दंश झेलना पड़ा।... लेकिन मेरा क्या होता? मेरा आश्रय तो मेरा पितृगृह भी नहीं बनता, क्योंकि कन्यादान के बाद मेरे पिता मेरे भार से मुक्त हो गए थे...माँ की छाती पर बोझ और पिता की पीठ पर सवार मैं भी ब्याह के बाद इन तमगों से मुक्त हो गई थी। विजय के पैतृक आवास पर भी मैं कोई दावा नहीं कर सकती थी, क्योंकि उनके लिए तो मैं 'पराए घर की बेटी' थी।...फिर मेरी सेवा कौन करता? मैंने तो सामाजिक दायित्व और बंधनों के चलते विजय की, देखभाल की; लेकिन मेरी देखभाल कौन?

विजय की बीमारी के दौरान हम आर्थिक रूप से टूट चुके थे, अतः सुरक्षित प्रसव के लिए भी मुझे शहर में रखने का भारी खर्च उठा सकने में बाबूजी असमर्थ थे। यद्यपि विजय की मृत्यु के पश्चात् हमारी हैसियत लखपति की थी, क्योंकि अब बीमा कंपनी, दफ्तर आदि के द्वारा मृत विजय के आश्रितों के नाम लाखों रुपए देय थे। दीनता की प्रतिमा बने बाबूजी प्रतिदिन दस बजते-न-बजते खा-पीकर घर से विजय के दफ्तर को निकलते और शाम ढले लौट आते—कभी निराश तो कभी दफ्तरों से मिले कल-परसों के आश्वासनों के साथ।

आज बाबूजी कुछ जल्दी लौट आए। वे कुछ प्रसन्न दिख रहे थे। पता चला कि पी.एफ. का चेक मिल गया है। हालाँकि राशि कम थी, लेकिन बाबूजी को आश्वस्त करने के लिए काफी थी कि अब धीरे-धीरे सब मिल जाएगा। बाबूजी ने बतलाया कि चेक मेरे नाम था और यह राशि मेरे बैंक खाते में ही जा सकेगी।

सुनकर अम्मा को अच्छा नहीं लगा था। शायद इसीलिए बात घुमाकर बोलीं, 'अब कहो

शब्दार्थ

तृप्त	–	संतुष्ट
अस्तित्व	–	पहचान
एच.आई.वी.	–	ह्यूमन इम्यूनो वाइरस का सकारात्मक परीक्षण
पॉजिटिव		
दुस्सह	–	जिसे सहन करना कठिन हो,
पितृगृह	–	पिता का घर
आश्वासन	–	दिलासा, आशा दिलाना

टिप्पणी

तो भला। कैसे जाएगी यह बेचारी शहर? हद करती है सरकार भी, नए-नए कानून पास कर देती है।'

दो-तीन दिनों बाद मैं और बाबूजी टैक्सी में बैठकर शहर गए थे। बैंक के दरवाजे पर अजय खड़े थे। सभी औपचारिकताएँ पूरी करके बैंक में खाता खुल गया था–संयुक्त खाता। मेरे और अजय के नाम। सच कहूँ तो मुझे बुरा लगा था, इसलिए नहीं कि पैसे मेरे अधिकार-क्षेत्र से बाहर जा रहे थे, बल्कि इसलिए कि मेरे सहज अधिकार को नकारा जा रहा था।

मुँह खोलकर तो मैंने कुछ नहीं कहा, पर बाबूजी मेरी आँखों में उभर आए सवाल को पढ़ पाए थे। उत्तर मिला था, 'तुम्हें बार-बार शहर आने में परेशानी होगी, इसलिए खाते में अजय का नाम भी डलवा दिया है, ताकि पैसे आसानी से निकाले जा सकें।

परेशानियाँ दूसरी भी थीं। पेट में बच्चा था और दिन-प्रतिदिन संक्रमण का भय मुझे सता रहा था। मेरी देह का सत्त्व तो जैसे निचुड़ता जा रहा था। आलस्य, पीड़ा, बेचैनी और चिड़चिड़ेपन के भाव मेरे अंतस में स्थायी होते जा रहे थे।...नहीं! मैं मरना नहीं चाहती थी। एक मानसिक आरोग्यशाला में किसी मनोरोगी की भयावह मौत तो मैं बिलकुल नहीं मरना चाहती।...मुझे मुक्त होना ही होगा–अतीत से, अपने रोग से और अपने भय से।

जीवन का मोह मेरे भीतर बहुगुणित होकर अँगड़ाइयाँ लेने लगा था। मैं निर्णय कर चुकी थी। सवेरे मैं बाबूजी के सामने थी। कुरसी पर बैठकर बाबूजी कल का पुराना अखबार पढ़ रहे थे।

मैं साहस बटोरकर बोली, 'बाबूजी, मुझे अपना चेकअप कराना है।'

बाबूजी ने चश्मे के ऊपर से गौर से मुझे देखा और कहा,' हूँ।

उनका संक्षिप्त 'हूँ' और भेदक आँखें मुझे डरा नहीं सके। मैंने ढीठ होकर कहा, 'नहीं बाबूजी, 'हूँ' से काम नहीं चलेगा। मैं डॉक्टर को ठीक-ठीक दिखाकर अपना ढंग से इलाज कराना चाहती हूँ, अपने बच्चे की सुरक्षा चाहती हूँ। विजय का रोग मुझ तक उतर आया है। मैं या तो इसकी पुष्टि या उससे निष्कृति चाहती हूँ।'

मेरा स्वर संभवतः कुछ तेज़ हो आया था, जिसे सुनकर अम्माजी दौड़ी चली आईं। मेरा हाथ खींचकर बोलीं, 'बौरा गई है क्या? कहीं सास-ससुर से इस तरह की बातें की जाती हैं?'

जाने कैसा विद्रोह मेरे भीतर पनप आया था कि मैंने झटके से अम्माजी से बाँहें छुड़ाईं, 'मुझे इलाज चाहिए। मुझे मेरा पैसा चाहिए, मेरी चेकबुक, पासबुक चाहिए। मैं खुद तसल्ली से अपना इलाज कराऊँगी।'

झटका खाकर अम्माजी ठगी-सी रह गई थीं। अब वे दोबारा सचेत हुईं, 'अच्छा, तो पैसों के लिए इतना पचड़ा है।' अम्माजी का स्वर खास तीखा और अपमानजनक था।

'नहीं, पचड़ा हक का है। सवाल अपने होने या 'ना' होने का है, मेरे अपने वजूद का है।' दृढ़ स्वर में मैंने जवाब दिया था।

शब्दार्थ

संयुक्त खाता – दो का मिल कर खोला गया बैंक में खाता
देह का सत्त्व – शरीर का मूल तत्त्व
मानसिक – मन संबंधी
आरोग्यशाला – रोग से मुक्त करने का स्थान
मनोरोगी – मन का रोगी
बहुगुणित – अनेक गुना
भेदक – भेद देने वाला

टिप्पणी

बाबूजी ने मुझे बीच में ही टोका, 'इस सिनेमाई भाषा को अपने कॉलेज के भाषण-बैठकों तक ही रखो, यहाँ मत बोलो। मैं जानता था, यह पचड़ा एक-न-एक दिन ज़रूर उठेगा, इसलिए मैंने पासबुक, चेकबुक सब कुछ अजय के हवाले कर दिया है।...उफ, ये शहर की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ।'

उनके आरोपों का प्रत्युत्तर देने की बजाय मैंने अपना निर्णय सुना दिया, 'तो आज मैं शहर जा रही हूँ अजय के पास।'

मैंने भीतर जाकर साड़ी बदली, कंधे से बाल सँवारे, ललाट पर बिंदिया लगाई। अब मेरे लिए यह मेरा सुहाग-चिह्न नहीं, मेरा शृंगार थी–अच्छी, सुरुचिपूर्ण और व्यवस्थित दिखने का साधन। मेरे शरीर की बाह्य प्रतीति, मेरी वेशभूषा तो मेरे व्यक्तित्व का ही एक अंग है। मेरी प्रभावपूर्ण व्यवस्थित साज-सज्जा मुझे आत्मविश्वास से भरती है। मैं क्यों नकारूँ? मैं क्यों त्यागूँ अपना सहज जीवन?

पता मेरे पास था। थोड़ी परेशानी ज़रूर हुई, किंतु आखिरकार मैंने अजय का घर खोज ही लिया था। दरवाज़ा खुला था। मैंने आवाज़ दी, 'करुणा।'

वे दोनों भीतर से बाहर आए। एक बार चकित हुए थे मुझे आँगन में खड़े देखकर। फिर अजय लपककर मेरे पास आए, मेरे चरण छुए। बाद में करुणा ने भी।

उनका यह व्यवहार मेरे लिए अप्रत्याशित था। मैंने सहज ही अनुमान लगा रखा था कि कहीं-न-कहीं उनके क्रोध, हिकारत और भय के केंद्र में मैं भी हूँ– विजय की पत्नी होने के नाते ही सही। विजय की पत्नी होने की मुझे क्या-क्या कीमत नहीं चुकानी पड़ी। उनकी इस खतरनाक बीमारी के साथ सामाजिक... पारिवारिक सरोकारों के टूटने का जो सिलसिला शुरू हुआ था, 'वह विजय के मरणोपरांत भी कहाँ थमा था? यहाँ तक कि उनकी मौत पर संवेदना प्रकट करने आए मेरे पिताजी भी मुझसे न जुड़ सके थे। एक अस्पृश्य-सा भाव बरतते हुए वे जो वापस लौटे थे तो फिर दोबारा उन्होंने या मेरे मायके वालों ने मेरी कोई खोज-खबर लेने की चेष्टा नहीं की!... पर इसके लिए मैं अकेले इन्हें ही दोषी क्यों मानूँ? सबके भीतर तो विजय के संसर्ग में मेरे रोगी बनने की धारणा घर कर गई थी। इस रूप में मैं सबके लिए मृत्यु का पर्याय थी। सभी तो मुझसे, मेरे रोग से डरते थे। कौन न डरे मृत्यु से! क्या मैं नहीं डरी थी? क्या आज उस रोग के भय से मैं मुक्त हूँ?

अजय मुझे कमरे में ले आए। करुणा ने मेरी बाँह पकड़ कर बिस्तर पर बैठा दिया। 'अच्छा किया, दीदी, जो घर से बाहर निकल आई। बाहर घूमने-फिरने से मन बदलेगा।' करुणा नम्र स्वर में बोली।

मैं पूर्णतः अव्यवस्थित हो चुकी थी। यथासंभव व्यवस्थित होने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा, 'मैं अम्मा-बाबूजी की मरज़ी के खिलाफ यहाँ आई हूँ।'

वे चुप रहे।

मैंने बात आगे बढ़ाई, 'मैं पूर्णतया स्वस्थ नहीं हूँ, अजय। मैं ढंग से इलाज कराना चाहती हूँ।

अजय मौन थे।

मैंने कहा, 'तुम मेरे यहाँ होने से डर तो नहीं रहे हो, अजय?

शब्दार्थ

प्रत्युत्तर	–	उत्तर का उत्तर
अप्रत्याशित	–	जिसकी आशा न हो, आकस्मिक
अस्प श्य	–	छूआछूत, अछूता
संसर्ग	–	संयोग, प्रेम, संबंध

अजय सूखी हँसी हँस पड़े थे, 'क्या कर लूँगा मैं डरकर? वैसे भी बहुत डर लिया। डरकर आदमी कहाँ तक भागे? ज़िम्मेदारियाँ तो हैं ना–घर की, परिवार की, समाज की। सावधानी तो ठीक है, लेकिन डर? वह निरर्थक है। उन दिनों रोग के प्रविष्ट होने के भय ने मुझे भागने पर उकसाया, पर मैंने पाया, भागना असंभव है। कहाँ तक, किस-किस से भागूँगा? दुनिया से भाग सकूँगा क्या?'

अजय के स्वर में आत्मविश्वास था। उन्होंने मेरी ओर देखा और बच्चों की भाँति निश्छल हँस पड़े 'लगता है, आप डर गई हैं।'

'हाँ, मैं डर गई हूँ। हाँ, अनुराधा जीना चाहती है, इसीलिए डर गई है।' और डरकर ही आज मैं अपने समस्त भयों से मुक्त हो चुकी हूँ।

अजय की सद्भावना पर अविश्वास का कोई कारण नहीं दिखता, फिर भी सोचती हूँ, यदि डॉक्टरी जाँच के दौरान मेरे भीतर रोग के लक्षणों की पुष्टि हो जाती है, क्या तब अजय अपने उसी पुराने व्यवहार में न लौट जाएँगे? मेरा बच्चा...। सब जान बूझकर.. .मुझे या विजय को क्या अधिकार था?... परंतु आज इन प्रश्नों का प्राप्य?...किसी भी प्रश्न का आज क्या औचित्य है?

आज अनुराधा समस्त प्रश्नों से मुक्त है। यह युद्धभूमि है और 'अनु' संघर्ष के लिए सन्नद्ध है। मेरे इस स्वाभाविक युद्ध में अब मेरे आड़े कुछ नहीं आएगा–न संस्कार, न मोह, न संबंध, न...! यदि शालीन रहकर अनुराधा यह संघर्ष कर सकी तो अत्युत्तम, अन्यथा वह भी त्याग देगी। यह युद्ध तो अब हर हाल में अनवरत चलेगा, यह संघर्ष होकर ही रहेगा, पीछे नहीं हटेगी अनुराधा इस संघर्ष से–जीने के लिए संघर्ष, अधिकारों के लिए संघर्ष, स्वाभिमान के लिए संघर्ष...अनुराधा का एक निरंतर संघर्ष।

–पंकज कुमार

शब्दार्थ

निरर्थक – बेकार का
प्रविष्ट – प्रवेश करना
सन्नद्ध – कस कर बँधा हुआ
अनवरत – लगातार

15.2 बोध प्रश्न

तो कैसी लगी आपको कहानी ? अपनी समझ के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

1. 'औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी हैं।' वाक्य अनुराधा ने किससे कहा–
   (क) देवर से (ख) अम्माजी से (ग) स्वयं से (घ) देवरानी से
2. विजय के छोटे भाई अजय ने घर क्यों छोड़ा?
   (क) उसे दूसरी जगह नौकरी मिल गई थी।
   (ख) उसकी पत्नी करुणा अनुराधा के साथ रहना नहीं चाहती थी।
   (ग) उसका अपने माता-पिता से झगड़ा हो गया था।
   (घ) वह बड़े भाई विजय के रोग से भयभीत था।

टिप्पणी

3. ''सभी विजय को छोड़ गए, मगर मैं कैसे छोड़ देती?'' अनुराधा ने क्यों कहा?

   (क) क्योंकि वह अपने संस्कारों, सामाजिक मर्यादाओं से बँधी थी।

   (ख) वह विजय से बहुत प्रेम करती थी।

   (ग) उसे पता था कि पति की बीमारी से वह अप्रभावित रहेगी।

   (घ) उसे पति की मृत्यु के बाद आर्थिक लाभ मिलने वाले थे।

4. अनुराधा ने शहर जाकर नौकरी करने के बारे में क्यों सोचा?

5. ''दिन बीत रहे थे, ऐसे ही घृणा-प्रेम, दया-क्रोध, जीवन-मृत्यु, रोग, उपचार के द्वन्द्व में'' वाक्य में किस प्रकार के शब्दों की प्रधानता है?

   (क) तत्सम (ख) देशज (ग) तद्भव (घ) विदेशी

6. आइए, देखें, आपको कथा का घटनाक्रम कितना याद है? नीचे कथा को कुछ उलटे-सीधे क्रम में दिया गया है। आप इन्हें क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए।

   1. अनुराधा का विवाह विजय से होता है।
   2. डॉक्टर उसे अपने पति से दूर रहने की सलाह देता है।
   3. अनुराधा ललित कला में बी.ए. करने के बाद उसमें अपना कैरियर बनाना चाहती है।
   4. माँ की जिद के आगे सब इच्छाएँ त्यागकर वह विवाह के लिए विवश हो जाती है।
   5. देवर अजय संक्रमण के भय से घर छोड़ कर चला जाता है।
   6. दो वर्ष तक वह माँ नहीं बन पाती।।
   7. विजय की मृत्यु के बाद बीमा कंपनी और दफ़्तर से काफ़ी धनराशि मिलती है।
   8. जाँच से पता चलता है कि विजय एच.आई.वी. पॉजिटिव है।
   9. अनुराधा अजय के घर पहुँच जाती है।
   10. संस्कारों से विवश होकर वह न चाहते हुए भी पति के अंधे प्रेम का दुष्प्रभाव अपने शरीर पर झेलती है।
   11. उचित इलाज के अभाव में रोग बढ़ता जाता है तथा अंततः विजय काल का ग्रास बन जाता है।
   12. अनुराधा सजग हो उठती है, उसे अपनी तथा होने वाले बच्चे के भविष्य की चिंता होने लगती है।
   13. वह संयुक्त खाते से अपना पैसा चाहती है।
   14. अनुराधा को समझ में आ जाता है कि सबका मोह त्यागकर उसे अब अपने लिए संघर्ष करना है।
   15. वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए ससुराल में विरोध के लिए बाध्य हो जाती है।

15.3 आइए समझें

घटना-क्रम तो आपको याद है पर क्या संपूर्ण कहानी आप समझ पाए? आइए, इसका विश्लेषण करते हैं।

अंश - 1

यह अधिकार .... इस दासत्व का प्राप्य?

कहानी का प्रारंभ होता है, उसकी नायिका के चिंतन-मनन से, जहाँ जीवन के वास्तविक संदर्भों में **'अधिकार'** का अर्थ खोजने का प्रयास करती है। उसे लगता है कि अधिकार बनते तो हैं सबके लिए समान रूप से परंतु उनका लाभ केवल सबल ही उठा पाते हैं। निर्बल तो इनसे वंचित रहकर, केवल कर्त्तव्य-पालन में ही जीवन व्यतीत कर देते हैं। तात्पर्य यह है कि सबल को ही जीने का वास्तविक अधिकार प्राप्त है।

अनुराधा अपना वजूद सुरक्षित कर लेना चाहती है। उसे आत्मज्ञान हो गया है कि वह भी इस सृष्टि की एक अनमोल कृति है। सृष्टि के विकास में उसका भी योगदान है, तो फिर वह सिर्फ़ दायित्व-वहन के लिए ही क्यों विवश रहे? क्या जीवन जीने का सामान्य, सहज-सा अधिकार माँगना भी अनुचित है? यह सब प्रश्न उसके मन-मस्तिष्क को मथने लगते हैं।

आपको क्या लगता है? अनुराधा के विचारों के निष्कर्ष से क्या आप सहमत हैं? सोचिए और स्वयं के विश्लेषण से इसकी तुलना कीजिए।

कथा के प्रारंभिक अंशों से सहज ही जिज्ञासा उभरती है कि अनुराधा के साथ ऐसा क्या घटित हुआ जो वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई और उसने निश्चय किया कि वह स्वयं को योग्यतम सिद्ध करेगी? कथा की परतें खुलने लगती हैं। आगे की पंक्तियों में ही वह बताती है कि उसके पति 'विजय' अब नहीं रहे। उनकी मृत्यु 'एड्स' से हो चुकी है। तुरंत ही कथा के प्रारंभ से इसके सूत्र जुड़ जाते हैं।

क्या प्रारंभ से ही नारी को कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की छूट नहीं देनी चाहिए? आपकी क्या राय है?

.....

.....

अब, जब परिस्थितियों ने उसे कठिनाई की अगन-भट्टी में डाल दिया तो उसका मस्तिष्क सक्रिय हो उठा। वह कहती है कि देह का प्रश्न यदि स्त्री की मान-मर्यादा से जुड़ता है तो क्या विवाह-वेदी पर बैठकर औरत अपनी मान-मर्यादा अपने पति के हाथों गिरवीं रख देती है? यदि 'पति' होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है।

क्या उत्तर देंगे आप अनुराधा के इन प्रश्नों का? आपको नहीं लगता उसके प्रश्नों में एक ऐसी सच्चाई है, जो आपको सोचने पर मजबूर करती है...! आप तुरंत या सहजता से उसका उत्तर नहीं दे पाते। वास्तव में मान-मर्यादा का, स्त्री की इच्छा-अनिच्छा का प्रश्न, जितना विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण है उतना ही विवाह के बाद भी। वैवाहिक जीवन की

सफलता तो पति-पत्नी दोनों पर निर्भर है तो फिर इस जीवन में एक अति महत्त्वपूर्ण और दूसरा पूर्णतया नगण्य कैसे हो सकता है? पति को स्वामी कहा जाए तो फिर गृह-स्वामिनी को 'दासी' ही क्यों माना जाए? क्या यह उचित है? दोनों को ही समान अधिकार, समान महत्त्व दिया जाए तभी स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है क्योंकि समाज, नारी-पुरुष के इसी सामंजस्य पर टिका है। अगर इनमें टकराव होगा तो भावी पीढ़ी का भविष्य अंधकार पूर्ण होने से कोई नहीं बचा सकता।

पाठगत प्रश्न 15.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अनुराधा के विचार से अधिकार किसके लिए बने हैं?

   (क) निर्बल के लिए
   (ख) सबल के लिए
   (ग) निर्बल-सबल दोनों के लिए
   (घ) किसी के लिए भी नहीं

2. कथा के प्रारंभ में अनुराधा–

   (क) अपने पति को स्वस्थ देखना चाहती है।
   (ख) अपने अधिकारों की माँग करती है।
   (ग) अपना इलाज कराना चाहती है।
   (घ) अपने पिता के घर जाना चाहती है।

3. 'एड्स' का रोग संक्रमित होता है–

   (क) एड्स ग्रस्त रोगी को छूने से
   (ख) रोगी को देखने से
   (ग) एच.आई.वी. संक्रमित खून चढ़ने से
   (घ) रोगी के साथ बैठकर खाने से

4. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही (√) कथन पर सही अथवा गलत कथन पर गलत (X) का निशान लगाइए:

   (क) अनुराधा को अपने पति के रोग का कारण ज्ञात था। ☐
   (ख) पति की बीमारी में अनुराधा की मुख्य भूमिका थी। ☐
   (ग) विवाह के पश्चात भी स्त्री की मान-मर्यादा को महत्त्व दिया जाना चाहिए। ☐
   (घ) पति की बीमारी को अपना मान कर स्त्री को संक्रमण से बचाव के प्रयास नहीं करने चाहिए। ☐
   (ङ) अनुराधा का चिंतन-मनन निर्मूल था। ☐

टिप्पणी

अंश - 2

शहर की बी.ए... मेरे रेशमी बाल।

आइए, अब आगे के पाठ को समझें जहाँ से अनुराधा की जीवन कड़ियों का प्रारंभ होता है।

अनुराधा शहर में पली-बड़ी एक सामान्य मध्यमवर्गीय नारी थी जिसने ललित-कला में बी.ए. किया था। वह उसी विषय में अपना कैरियर बनाना तथा प्रसिद्धि पाना चाहती थी परंतु माता-पिता की इच्छानुसार शीघ्र ही उसे विवाह के बंधन में बँधना पड़ा। उसके पति नौकरी तो शहर में करते थे परंतु रहते गाँव में थे, इसी कारण वह भी विवाह के पश्चात गाँव में रहने लगी। सामाजिक सोच के अनुसार उसका पति कमा रहा था तो काम करने की उसे क्या आवश्यकता थी?

क्या आप भी ऐसी ही सोच रखते हैं? परिस्थितियों में परिवर्तन आया है पर कितना? विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

विवाह के प्रारंभिक दिनों में अनुराधा को कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई परंतु दो वर्ष तक जब वह माँ नहीं बन पाई तो उसकी सास के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा।

बाद में जब अनुराधा की माँ बनने की चाहत को विजय ने हँसकर टाला और वह बीमार भी रहने लगा तो जाँच हुई और ज्ञात हुआ कि विजय एच.आई.वी. पॉजिटिव है। डॉक्टर की अन्य हिदायतों के साथ अनुराधा को पति से दूर रहने की विशेष सावधानी भी शामिल थी।

विजय के रोग के संक्रमण के भय से उसका छोटा भाई 'अजय' भयभीत होकर घर छोड़ गया तथा अन्य रिश्तेदार यहाँ तक कि विजय के माता-पिता भी उचित जानकारी के अभाव में डरकर यथासंभव उससे दूर रहने लगे। उनका घर घृणा का पात्र बन गया तथा जिस समय उन्हें अधिक प्रेम, सहानुभूति, निर्देशन तथा देखरेख की आवश्यकता थी, उसी समय सब लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया।

आइए, इस स्थिति पर विश्लेषण करें। परिवार में एक सदस्य को एच.आई.वी. पॉजिटिव है। ऐसे में क्या अजय की भाँति पलायन कर जाना ठीक है? क्या अनुराधा और विजय की भाँति चुपचाप स्वीकार कर लेना और कुछ न करना ठीक है। आप मानेंगे कि दोनों बातें ठीक नहीं हैं। ऐसी स्थिति में सबसे पहले परिवार के सदस्यों में खुलकर चर्चा होनी चाहिए। एड्स दबाने-छिपाने से लाभ नहीं, हानि ही होती है। तो क्यों न एक युक्ति और रणनीति ऐसी बनाई जाए जो रोगी और उसके परिवार के लिए ठीक हो।

आपने ऐसी अनेक घटनाएँ सुनी और समाचार पत्रों में पढ़ी होंगी जहाँ एड्स रोगी को उसके हालात पर छोड़ दिया गया। लोग उससे दूर भागते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि रोगी के साथ सामान्य व्यवहार और संपर्क से एड्स नहीं फैलता। यह तो केवल रोगी के रक्त के आदान-प्रदान से या उससे यौन संबंधों से फैलता है।

कहानी में अनुराधा को भय से आक्रांत दिखाया गया है। परंतु संस्कारों और सामाजिक मर्यादाओं से बँधी वह वहीं रहने तथा वही करने को मजबूर हो गई थी जैसा पति का

अंधप्रेम चाहता था। वह जानती थी कि अग्नि को साक्षी मानकर दोनों ने जीवन-मरण में साथ रहने की प्रतिज्ञा की थी तो त्याग, पति-प्रेम, सेवा जैसे भारतीय नारी-सुलभ गुणों को वह कैसे भूल सकती थी! यही कारण था कि वह डॉक्टर की चेतावनी की अवहेलना कर विजय के कमरे में ही सोती रही, ताकि विजय एकाकी महसूस न करें, मृत्यु से पहले और अधिक कष्ट का अनुभव न करें।

परंतु अनुराधा का यह अपनापन, त्याग भावना और निःस्वार्थ सेवा उसके पति की इस चेतना और समझ को विकसित नहीं कर पाए कि डॉक्टर की बात मानते हुए अब उसे अनुराधा के अति सामीप्य से बचना चाहिए। उसे भी अपने जीवन-साथी को यथासंभव इस रोग की चपेट में आने से बचाना चाहिए। वह पूर्ववत् अपने शारीरिक अधिकारों की पूर्ति करता रहा और इस पर उल्लेखनीय बात यह है कि उसे यह भी अनुभव नहीं हुआ कि वह कोई गलती कर रहा है। उल्टे वह अपने कृत्य को 'भाग्य' के लेख तले ढकता रहा।

दूसरी ओर, अनुराधा की सास भी अपने बेटे को कुछ समझाने की अपेक्षा बहू को ही औरत का 'धर्म' समझाती रही। यद्यपि वह स्वयं अपने पुत्र के निकट आने में कतराती थी तथापि बहू को पति की इच्छापूर्ति करते हुए अपने सब लोक सुधारने की शिक्षा देना नहीं भूलती थी। बेटे-बहू के बीच के इस भेदभाव को देखकर अनुराधा चिल्ला-चिल्लाकर विद्रोह करना चाहती थी तथा अपनी सास को समझाना चाहती थी कि स्त्री के पास शरीर ही नहीं दिल और दिमाग भी होता है पर 'आदर्श बहू' के संस्कार उसे मौन कर देते थे। आप सोचिए क्या इस सीमा तक उसका झुकना, चुप रहना ठीक था?

क्रियाकलाप

उपर्युक्त वर्णन पढ़कर आपको कैसा लगता है? क्या आपके आस-पास भी ऐसी घटनाएँ नहीं होतीं या स्वयं आपके साथ ही कभी कोई स्थिति आई हो जब घर में खुलकर अपनी बात न कह पाने का आपको दुष्परिणाम झेलना पड़ा हो? सोचकर लिखिए।

.....

.....

आइए कहानी के विश्लेषण को आगे बढ़ाते हैं–

इसी प्रकार स्वयं से संघर्ष करते अनुराधा के दिन बीतते रहे और उसके पति की बीमारी बढ़ती गई। अंततः वह घड़ी भी आ पहुँची, जिसका पता सबको था। परंतु फिर भी कोई भावी-योजना नहीं बनाई गई थी। रात्रि का समय था जब विजय के पास अकेली अनुराधा ही बैठी थी कि उसने प्राण त्याग दिए।

अगले दिन उसके पति का अंतिम संस्कार कर दिया गया। विजय के रोग से भयभीत रिश्तेदार तथा पड़ोसी मृत्यु के पश्चात भी घर नहीं आए। अब तक सब कुछ सहने, भोगने वाली अनुराधा के ऊपर अब भी किसी की करुण-दृष्टि नहीं पड़ी। उससे मात्र औपचारिकताएँ पूर्ण करवाई गईं।

कैसा अनुभव कर रहे हैं आप 'अनुराधा' की व्यथा-कथा को पढ़ते हुए? अनेक प्रश्न आपके मन-मस्तिष्क को भी झकझोर रहे होंगे? देखिए, कहीं ये प्रश्न वही तो नहीं? इनका उत्तर खोजने का प्रयास कीजिए।

पाठगत प्रश्न 15.2

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. डॉक्टर ने अनुराधा को पति से बचे रहने के लिए निर्देश दिया था। आपके अनुसार–
   (क) अनुराधा को पति को छोड़कर दूर चले जाना चाहिए था।
   (ख) उसी घर में रहना चाहिए था परंतु उसके कमरे में नहीं जाना चाहिए था।
   (ग) उसकी देखभाल के लिए किसी नौकर, नर्स आदि को रखना चाहिए था।
   (घ) स्वयं उसकी देखभाल करते हुए अपना बचाव भी करना चाहिए था।
2. अनुराधा की स्थिति में किसी भी नारी को सामाजिक मर्यादाओं और संस्कारों का–
   (क) आँख मूँद कर पालन करना चाहिए।
   (ख) सोच–समझ कर विवेकपूर्ण निर्णय लेने चाहिए।
   (ग) पूर्णतया बहिष्कार कर देना चाहिए।
   (घ) इच्छानुसार पालन करना चाहिए।
3. डॉक्टर ने विजय को दूसरे अस्पताल ले जाने के लिए कहा था। आपके अनुसार–
   (क) विजय का निर्णय ठीक था। उसे अस्पताल जाने की बजाय घर में ही अपनों के बीच ज़िंदगी के अंतिम दिन गुज़ारने चाहिए थे।
   (ख) उसका रोग लाइलाज था अतः अन्य किसी अस्पताल में जाकर कोई लाभ नहीं होता। अतः घर पर ही रहना ठीक था।
   (ग) उसे डॉक्टर की राय माननी चाहिए थी और अपनी पत्नी अनुराधा से दूर रहना चाहिए था।
   (घ) उसे इलाज पर व्यर्थ का खर्चा नहीं करना चाहिए था। यही सोचकर वह कहीं और नहीं गया।
4. विजय की बीमारी का पता चलते ही उसका छोटा भाई अजय घर छोड़कर चला गया तथा माता-पिता उससे कटे-कटे रहने लगे। आपके अनुसार –
   (क) यह अनुचित था क्योंकि एड्स-ग्रस्त रोगी के साथ रहने मात्र से यह रोग नहीं होता। यह छूत का रोग नहीं है।
   (ख) यह उचित था क्योंकि एड्सग्रस्त रोगी की श्वास-प्रक्रिया से इस रोग के कीटाणु घर में फैल रहे थे।
   (ग) यदि वह भी साथ रहने से बीमार हो जाते तो रोगी की सेवा कौन करता?
   (घ) अजय को एच.आई.वी. एड्स के बारे में अधिक पता नहीं था।

टिप्पणी

5. कहानी पढ़ने के बाद आपको विजय के चरित्र के विषय में क्या प्रबल धारणा बनती है–

   (क) विजय स्नेही पति था इसलिए सदैव अनुराधा से संबंध बनाए रखना चाहता था।

   (ख) विजय को प्यार की सही परिभाषा नहीं पता थी अन्यथा वह अनुराधा को अपने रोग से बचा कर रखने का प्रयास करता।

   (ग) विजय जाने से पहले अनुराधा को बच्चे के रूप में जीने का सहारा देकर जाना चाहता था। अतः उसका व्यवहार उचित था।

   (घ) विजय को यह ज्ञात नहीं था कि यह रोग कैसे दूसरे व्यक्ति को संक्रमित करता है।

अंश - 3

मेरे गर्भ में .....निरंतर संघर्ष।

पति की मृत्यु के पश्चात विधवा रूप में आते ही 'अनुराधा' के जीवन में एक नया अध्याय प्रारंभ होता है। उसमें क्या परिवर्तन होते हैं? आइए, इस अंश में पढ़ते हैं।

अनुराधा गर्भवती है, यह जानकर भी उसके सास-ससुर अनुराधा के स्वास्थ्य की जाँच करवाने को तैयार नहीं होते। देवर अजय ही उस समय आगे आकर इस बात पर बल देता है कि भाभी तथा होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य की जाँच करवा लेनी चाहिए तथा यथासंभव उन्हें भाई के रोग से बचाने का प्रयास किया जाना चाहिए। अनुराधा भी उस समय देवर की बात का संबल पाकर, उसका समर्थन करती है परंतु सास की कड़ी नज़रों तथा वचनों के आगे उसका विरोध दबकर रह जाता है। सास की धारणा थी कि यदि रोग हो ही गया है तो जाँच कराने से क्या लाभ! उसका निदान तो है नहीं।

विजय की बीमारी के दौरान घर की आर्थिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी परंतु बाद में बीमा कंपनी तथा दफ़्तर आदि से कठिनाई से प्राप्त राशि से हालात में सुधार आने की संभावना बन गई थी। यह राशि सिर्फ़ अनुराधा के हस्ताक्षर के बाद ही प्राप्त हो सकती थी, यह जानकर उसकी सास को अच्छा नहीं लगा था।

बाद में ससुर के साथ शहर जाने के बाद उसका बैंक में खाता खुलवाया गया था पर यह खाता संयुक्त रखा गया था, उसके और अजय के नाम पर। यह देखकर अनुराधा विचलित हो गई थी क्योंकि उसे लगता था पति की धनराशि पर, जो सिर्फ़ उसके नाम थी, उसके सहज अधिकार को नकारा जा रहा था। पर हर बार की तरह अब भी वह अपनी भावनाओं को दबाकर रह गई थी, खुलकर विरोध नहीं कर पाई। ससुर ने ही उसकी आँखों में उभरते प्रश्न को पढ़कर कारण स्पष्ट कर दिया कि यह व्यवस्था उसे बार-बार शहर जाने से बचाने के लिए की गई है।

अनुराधा मनोवेगों पर नियंत्रण रखते-रखते स्वयं ही जूझ रही थी। वह जानने को बेचैन थी कि कहीं वह रोगग्रस्त तो नहीं! यदि वह रोगग्रस्त है तो क्या आनेवाला बच्चा भी संक्रमित होगा या नहीं? वह किसी के साथ इन समस्याओं को बाँट नहीं पा रही थी, परिणामस्वरूप उसके व्यवहार में भी चिड़चिड़ापन आ गया था।

टिप्पणी

आपको अनुराधा का यह व्यवहार तथा अंतर्द्वन्द्व क्या सोचने पर मजबूर करता है? क्या आपको लगता है यदि वह किसी से खुलकर बात कर पाती तो उसे अपनी समस्याओं का कुछ हल मिलता?

स्वयं से संघर्ष करते-करते अनुराधा को एक बात तो स्पष्ट रूप से समझ में आ गई थी और वह यह कि वह मरना नहीं चाहती, न तो बीमारी की अवस्था में बिना जाँच और इलाज कराए, न ही मन-ही-मन घुटते-घुटते मानसिक आरोग्यशाला में मनोरोगी बनकर। उसने दृढ़ निश्चय किया कि उसे अब अपने अतीत, रोग, भय आदि से मुक्त होना ही होगा। सारी शक्ति बटोरकर, ठोस निर्णय लेकर अगले दिन वह ससुर के सम्मुख जा खड़ी हुई और साहस के साथ अपने चेकअप कराने की मंशा जाहिर की। उसने विद्रोहात्मक स्वर में अपने इलाज, पैसे, चेकबुक, पासबुक की माँग की तथा यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह उन पर निर्भर न रहकर स्वयं तसल्ली से अपना इलाज कराएगी।

उसके इस आवेश से अम्मा आश्चर्य चकित रह गईं क्योंकि अनुराधा का यह रूप उनके लिए अप्रत्याशित था। उन्हें लगा था कि वह पैसों को पाने के लिए यह सब कर रही है।

अनुराधा ने तुरंत ही शहर जाने का निर्णय कर लिया। आंतरिक संतुष्टि के साथ-साथ आज उसे बाहरी व्यवस्थित साज-सज्जा पर भी विद्रोह की आवश्यकता अनुभव होने लगी। उसने साड़ी बदली, बाल सँवारे तथा विधवाओं के लिए त्याज्य समझी जाने वाली बिंदी भी लगाई क्योंकि वह अनुभव कर रही थी कि वेशभूषा भी व्यक्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा है। उसे जीवन को सुरुचिपूर्ण और व्यवस्थित बनाना है तो दिखना भी वैसा ही होगा। स्वयं में आत्मविश्वास भरने के लिए उसे जीवन में सहजता अपनानी होगी। असहज और अलग दिखकर वह सामान्य जीवन कैसे जी पाएगी। और आखिर क्यों दिखे वह अव्यवस्थित?

अनुराधा की जगह स्वयं को रखकर ज़रा सोचिए कि क्या उसके प्रश्न तर्कसंगत नहीं? क्या विधवा का रूप धारणकर सारी उम्र पति की याद में रो-रोकर बिता देनेवाली नारी अधिक पतिव्रता होती है? बाहरी वेशभूषा क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण होती है? सोचकर अपने विचार लिखिए।

.....

.....

अनुराधा के एक ठोस निर्णय ने अब उसके समक्ष आनेवाली सारी बाधाओं को छोटा कर दिया था, इसीलिए वह अकेली ही अजय का घर ढूँढ़कर उसके पास पहुँच गई। देवर-देवरानी पहले तो उसका साहस देखकर हैरान हुए पर शीघ्र ही उनके मन में श्रद्धा भाव जाग्रत हो उठा। उन दोनों के पैर छूने पर अनुराधा सोच में पड़ गई क्योंकि उनसे इस प्रकार के व्यवहार की उसे उम्मीद नहीं थी। वास्तव में पति की बीमारी के समय उसने सब रिश्तों को जिस प्रकार टूटते देखा था, अपनों को जैसे बदलते देखा था उसके बाद बीमारी से भय, घृणा तथा क्रोध के भाव ही, उसे सबकी आँखों में तैरते दिखते थे। उपेक्षाओं के बीच जीते हुए वह अजय के आदरपूर्ण व्यवहार से चौंक गई।

देवरानी करुणा ने भी उसे संबल दिया तथा उसका बाहर निकलना उचित माना। यह जानकर कि वह सास-ससुर की इच्छा के विरुद्ध अपना इलाज करवाने चली आई है; दोनों पति-पत्नी मौन हो गए। अनुराधा के पूछने पर अजय ने स्पष्ट किया कि वह समझ गया है कि जीवन में आए संकटों तथा ज़िम्मेदारियों से भागना संभव नहीं है तथा न ही यह उनसे बचने का स्थायी उपाय है। सावधानियाँ बरतना उचित है किंतु भय से भागना अनुचित। मनुष्य को इसी संसार में, इसी समाज में रहना है तो इसकी बुराइयों, कमियों, कष्टों से बचकर वह कहाँ भागेगा!

अजय का यह निष्कर्ष सर्वथा उचित है। सच है कि एड्स हो या कोई अन्य बीमारी, संसार का कौन-सा ऐसा भाग है जो इन सबसे रहित है? सावधान रहें तो हम इन खतरनाक बीमारियों से बचाव के उपाय ढूँढ़ कर, उसे पराजित कर सकते हैं, उसका निदान खोज सकते हैं। पर अगर ऐसे में यदि हम रोगग्रस्त व्यक्ति को छोड़कर ही चले जाएँ, उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगें, उसकी जाँच करवाए बिना उसे रोगी मान लें, बीमारियों के निदान के लिए प्रयास ही न करें तो? इस प्रकार तो इस जैसे रोगों के संकट समाज को घेरे ही रखेंगे।

अजय का आत्मविश्वास से पूर्ण यह निष्कर्ष हमें भी संघर्षों से जूझने तथा उन पर विजय पाने की प्रेरणा देता है। अनुराधा भी संघर्षरत थी। विचारों में अंतर्द्वंद्व चल रहा था। उसे लग रहा था कहीं वह जाँच करवाने के बाद रोगग्रस्त पाई गई तो क्या होगा? उसका बच्चा क्या इस प्रभाव से बच पाएगा? इन प्रश्नों के बीच घिरी होने पर भी, अजय के आत्मविश्वास ने कहीं उसे भी इस निष्कर्ष पर ला खड़ा किया था कि इन सब प्रश्नों से डरना, परिस्थितियों से भागना अथवा कर्महीन रहना उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता।

जीवन युद्धभूमि, कर्मभूमि है तथा अनुराधा उसमें संघर्ष के लिए तत्पर। वह जीने के लिए, अधिकारों के लिए, स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने को कटिबद्ध है। इस मार्ग में अब कोई बाधा उसे रोक नहीं पाएगी। संस्कार, मोह तथा संबंध आदि से ऊपर उठकर, यहाँ तक कि आवश्यक हुआ तो शालीनता को भी त्यागकर वह अनवरत इस जीवन-संघर्ष में जुटी रहेगी।

इस कहानी का अंत वास्तव में नारी के अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष की शुरूआत है। यहाँ अनुराधा के जीवन में एक नया मोड़ आता है, जहाँ से वह स्वयं के लिए जीवन जीने का संकल्प लेती है।

पाठगत प्रश्न 15.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. अजय के साथ अनुराधा का संयुक्त खाता खुलने पर अनुराधा को अच्छा नहीं लगा था क्योंकि –

   (क) अजय सारी धनराशि का स्वामी बन गया था।

   (ख) अजय विश्वास पात्र नहीं था।

टिप्पणी

(ग) अनुराधा के सास-ससुर देवर को कहकर पैसे निकलवा सकते थे।
(घ) पति की संपत्ति पर उसके सहज अधिकार को नकारा जा रहा था।

2. शहर जाने से पूर्व अनुराधा ने बिंदी भी लगाई क्योंकि–
(क) वह नहीं जानती थी कि यह सुहाग–ऽचिह्न सिर्फ़ सुहागनों के लिए है।
(ख) वह अपनी सास को पीड़ा पहुँचाना चाहती थी।
(ग) व्यवस्थित साज-सज्जा से वह स्वयं में आत्मविश्वास भरना चाहती थी।
(घ) वह आकर्षक और सुंदर दिखना चाहती थी।

3. जब अनुराधा अजय के घर पहुँची तो –
(क) देवर-देवरानी ने उसका आदर-सत्कार नहीं किया।
(ख) दोनों ने तुरंत आगे बढ़कर उसके चरण छुए।
(ग) उसे संक्रामक रोगी समझ कर दोनों दूर चले गए।
(घ) सास-ससुर की बात न मानने के कारण उसे बुरा-भला कहा।

अंश - 5

आइए अब कथा के शीर्षक पर विचार करें। किसी भी रचना का उपयुक्त शीर्षक वह होता है, जो उसके मूल कथ्य से पूरी तरह जुड़ा होता है। इस दृष्टि से 'अनुराधा' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि कथा का ताना-बाना उसकी प्रमुख नायिका 'अनुराधा' पर ही बुना गया है। पूरी कथा उसके इर्द-गिर्द घूमती है। दूसरे पात्र इसमें यदि आए भी हैं तो भी वह 'अनुराधा' की ही चारित्रिक विशेषताओं को उभारने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अनुराधा एक ऐसी भारतीय नारी का प्रतीक है, जो संस्कारों और शालीनता से बँधी अपने पितृ तथा पति-गृह के सारे दायित्वों को पूर्ण करती है। जो चाहकर भी विरोध नहीं कर पाती तथा मर्यादाओं में रहकर अनेक विडंबनाओं का शिकार बनती है। परंतु अंततः वह सीख जाती है यदि अपना अस्तित्व कायम रखना है तो अपना आत्मबल एकत्रित कर संघर्षशील बनना ही होगा। जीवन की इस रणभूमि में बहुत कुछ त्याग कर ही युद्ध के लिए उतरना होगा, तभी वह उसमें विजयी होने की आशा रख सकती है। वह स्वयं इस क्षेत्र में कदम उठा कर सिद्ध करती है कि आज की नारी को अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करना होगा तथा संघर्षशील बनना होगा। कहानी का यह संदेश 'अनुराधा' के माध्यम से ही उभरकर सामने आता है। इस दृष्टिकोण से यह शीर्षक पूर्णतया उचित है।

15.4 भाषा-शैली

पंकज कुमार की प्रस्तुत कहानी समस्या प्रधान है। कथा का उद्देश्य प्रमुख रूप से वर्तमान समाज में नारी की समस्याओं को उभारना तथा उसे जागरूक बनाना है। इसीलिए इसमें **चिंतन प्रधान शैली** प्रमुख है। नारी-मन की अंतर्व्यथा का वर्णन करते हुए **मनोविश्लेषणात्मक शैली** का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः अनुराधा का यह स्वतः

टिप्पणी

कथन पढ़िए– *''.....नहीं! मैं मरना नहीं चाहती थी। एक मानसिक आरोग्यशाला में किसी मनोरोगी की भयावह मौत तो मैं बिलकुल नहीं मरना चाहती। मुझे मुक्त होना ही होगा – अतीत से, अपने रोग से और अपने भय से।''* इसी प्रकार *''मेरी प्रभावपूर्ण व्यवस्थित साज-सज्जा मुझे आत्मविश्वास से भरती है। मैं क्यों नकारूँ? मैं क्यों त्यागूँ अपना सहज जीवन?''*

उपर्युक्त वाक्य जहाँ अनुराधा का आत्म-मंथन दर्शाते हैं, वहीं **प्रश्नात्मक** शैली के माध्यम से समाज के सामने प्रश्नों की झड़ी-सी लगा देते हैं – पाठक मजबूर होकर इनके हल तलाशने लगता है। वह सोचने लगता है कि उसने अब तक समस्याओं से बचकर भागने से क्या पा लिया? अजय के संवाद के माध्यम से लेखक कहता है – *''डरकर आदमी कहाँ तक भागे? जिम्मेदारियाँ तो हैं न– घर की, परिवार की, समाज की। सावधानी तो ठीक है, लेकिन डर? किस-किस से भागूँगा? दुनिया से भाग सकूँगा क्या?''*

विजय की मृत्यु के बाद की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए वृत्तात्मक शैली का भी प्रयोग है जहाँ विस्तारपूर्वक अनुराधा के माध्यम से एक भारतीय विधवा की सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। गाँव के घर का वर्णन करते हुए **वर्णनात्मक शैली** का प्रयोग किया गया है।

कहीं-कहीं समस्याओं को उभारने के लिए **व्यंग्यात्मक शैली** का भी प्रयोग है, जैसे अनुराधा अपने विवाह-पूर्व जीवन का वर्णन करते हुए कहती है कि *''मैं ललित कला को अपना कैरियर बनाना चाहती थी लेकिन माँ की ज़िद थी कि ब्याह के बाद लड़की को घर सँभालना चाहिए और फिर जब मर्द कमा रहा हो तो औरत को काम करने की क्या ज़रूरत?''* स्पष्ट है कि नारी ही नारी के अस्तित्व को कुछ नहीं समझती, न ही उसे सही राह सुझाती है। उसे आत्मनिर्भर बनने से वे रोकती भी हैं।

जब विजय की बीमारी का सबको पता चलता है, तब सब उससे दूर हो जाते हैं पर जिस पर संक्रमण का सबसे अधिक प्रभाव हो सकता था, वही अनु सिर्फ़ विजय के पास छोड़ दी जाती है। उस समय वह व्यंग्यपूर्वक सोचती है – *''आखिर मेरे सिवा उनकी सेवा करता कौन? मैं सोचती–पढ़-लिखकर भी मैं संस्कार भ्रष्ट नहीं हुई। त्याग, सेवा, पतिप्रेम जैसे भारतीय नारी-सुलभ मूल्य आज भी मुझ जैसी सुशिक्षिता आत्मचैतन्य स्त्री को थामे हुए हैं।''* सिर्फ़ डिग्रियाँ पाने वाले शिक्षित किस प्रकार मानवीय भावनाओं, संस्कारों से शून्य होते जा रहे हैं, सिर्फ़ पत्नी के कर्त्तव्य समाज को याद रहते हैं आदि समस्याओं पर यहाँ व्यंग्यपूर्वक चोट की गई है।

कहानी में कहीं-कहीं **चित्रात्मक शैली** का भी प्रयोग है। अनुराधा जब अपनी जाँच करवाने के लिए आतुर होकर अपने ससुर के पास जाती है तथा अपने पैसों की माँग करती है। उस समय किस प्रकार वह कुर्सी पर बैठे पुराना अखबार पढ़ते हैं तथा चश्मे के ऊपर से देखकर अनु के साथ संक्षिप्त बातचीत करते हैं और अनुराधा की तेज़ आवाज़ सुनकर उसकी सास आकर प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। उसका सजीव चित्रण है। दोनों के संक्षिप्त संवाद उनके चरित्र का विश्लेषण करने में भी काफ़ी सहायक सिद्ध होते हैं।

टिप्पणी

कथा में बहुत सीमित पात्र हैं और सभी अपनी-अपनी समस्याओं में इतने उलझे हैं कि उन्हें अधिक बातचीत करने का अवकाश ही नहीं है। प्रमुख पात्र 'अनुराधा' अक्सर आत्मचिंतन में लीन रहती है। शादी से पहले वह माता-पिता की इच्छानुसार चुपचाप शादी कर अपनी इच्छाओं का दमन कर लेती है तथा विवाहोपरांत पति के रोगग्रस्त होने के बाद उसे दुख न पहुँचे इसलिए वह उससे अपनी पीड़ा नहीं बाँटती।

वह सास की भी अनुचित माँगों को सुनती है पर कथा के उत्तरार्द्ध में वह घुटती-घुटती विद्रोह कर बैठती है। सास के रोकने पर भी वह ससुर से कहती है – *''मुझे इलाज चाहिए। मुझे मेरा पैसा चाहिए, मेरी चैकबुक, पासबुक चाहिए।''* सास की व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी पर कि *''अच्छा, तो पैसों के लिए इतना पचड़ा है।''* वह उन्हें स्पष्ट करती है – *''नहीं', पचड़ा हक का है। सवाल अपने होने या न होने का है, मेरे अपने वजूद का है।''* संवाद अनुराधा के अंतर्द्वन्द्व को भली-भाँति उजागर करते हैं।

करुणा का सिर्फ़ एक वाक्य है तथा उसके सास-ससुर और देवर के भी बहुत सीमित वाक्य हैं। पर यह सीमित वाक्य भी इन तीनों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कर देते हैं। पति के साथ अनुराधा का कोई वार्तालाप ही नहीं है। जब भी उसके संवाद हैं, एकतरफ़ा हैं।

इस कहानी में वाक्य-संरचना सरल तथा आम बोलचाल की है जिसमें भावानुरूप तद्भव देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द आए हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

तत्सम – कर्त्तव्य, दायित्व, अजस्र प्रवाह, दुष्परिणाम, संक्रमण, दासत्व, प्राप्य, निकटवर्ती, विवर्ण, अज्ञात, अभिशाप, दावानल, साक्षी, शुश्रुषा, द्वंद्व, प्रकरण, पैतृक आवास, आरोग्यशाला।

तद्भव – आज, मेरा, आँसू, पिता, पूरब, पलंग आदि।

देशज – छीजते, घर्र-घर्र, सटाकर, तुरत-फुरत, रुलाई, अटकी, पचड़ा, उकसाया, लिवा लाना।

विदेशी – वजूद, हजामत, हैसियत, मुताबिक, पुश्तैनी, खैराती, बिरादरी, हक, हिकारत, तमाशबीन, अव्वल

(उर्दू, अरबी-फारसी)

अंग्रेज़ी – पास बुक, पी.एफ., चेक बुक, एच.आई.वी. पॉजिटिव, केस हिस्ट्री, प्रिसक्रिप्शन, लेडी डॉक्टर, आदि।

कहानी में सूक्ति वाक्य भी हैं, जैसे –

1. *''यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से ही आता है।''*

2. *''औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी है।''*

अभिधा ही नहीं, लक्षणा और व्यंजना द्वारा भी लेखक ने अव्यक्त को स्पष्ट कर दिया है, जैसे – *''विजय पुरुष थे, मेरे स्वामी थे और मैं उनके जन्म-जन्मांतर की 'दासी'।''*

''फिर एक भारी अंतर यह था कि विजय पुरुष थे और मैं स्त्री। पुरुष होने के बावजूद

उन्हें उपेक्षा और घृणा का दंश झेलना पड़ा लेकिन मेरा क्या होता?'' आदि अन्य भी कुछ अधूरे वाक्यों को पाठकों को समझने के लिए छोड़ दिया गया है।

कुछ वाक्य अत्यंत गहराई लिए हैं, जैसे, *'जब समय को लकवा मार जाता है, तब सन्नाटा स्वयं चीखने-चिल्लाने लगता है।'*

'भोक्ता तो भोक्ता, कर्त्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था।'

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लेखक की लेखनी में काफी क्षमता है तथा उन्होंने मात्र, भाव, संदेश, कथानक, वातावरण आदि सबका ध्यान रखते हुए अनेक प्रकार की शैलियों का यथास्थान प्रयोग किया है। मूल कथ्य और सहजता को बरकरार रखते हुए शब्द-भंडार में कहीं से भी कोई शब्द लेने में उन्होंने संकोच नहीं किया है।

15.5 कहानी का उद्देश्य

श्री पंकज कुमार द्वारा नारी के जीवन की समस्याओं को उभारने वाली यह कथा इस बात का प्रमाण है कि नारी-समाज हो अथवा पुरुष वर्ग, दोनों ही बढ़ती सामाजिक विसंगतियों के शिकार हैं, दोनों ही भ्रमित हैं तथा अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अब उनका पहले से व्यापक दृष्टिकोण है इसलिए स्वयं पुरुष होते हुए पंकज कुमार अनु के माध्यम से स्पष्ट लिखते हैं *''यदि पति होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है? क्यों करे कोई स्त्री अपने पति का 'स्वामित्व' स्वीकार? इस दासत्व का प्राप्य?''*

दूसरी ओर अनुराधा की सास के रूप में पुरानी परंपराओं का अनुरोध है कि ''...पति जैसा चाहे वैसा करना पड़ता है। इसी में औरत का इहलोक और परलोक दोनों हैं।'' विजय भी अपनी माँ के समान ही सोचता है। उसे भी लगता है कि नारी स्वयं अपना संबल नहीं हो सकती इसीलिए एड्सरोगी होते हुए भी वह अनुराधा की सुरक्षा के लिए कुछ इस तरह सोचता है: *''एक बच्चा तुम्हें दे जाऊँ, जो मेरे बाद तुम्हारा संबल हो सके।''* उसका अपनी भावनाओं पर कोई नियंत्रण नहीं है तथा वह अपने अनैतिक व्यवहार को इस खूबसूरती के साथ व्यक्त करता है कि उसके पीछे छिपी कमजोरी को सिर्फ अनु ही समझ पाती है। तभी वह कहती है *''कैसी विचित्र परिभाषा थी प्यार की।''* वह जानता था एड्स में लापरवाही जीवन के लिए घातक हो सकती थी।

एक स्थान पर अनुराधा कहती है *''यदि 'योग्यतम' को ही यहाँ जीवन-रक्षा का अधिकार है तो मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अपने आपको योग्यतम सिद्ध करूँगी।''* प्रारंभ में डरी, सहमी, दबी रहने वाली अनु बाद में आक्रामक हो उठती है। नारी शक्ति की प्रतीक यह नारी अनेकानेक प्रश्नों से समाज को झकझोर डालती है।

लेखक चाहता है कि समाज एड्स जैसे रोगों के कारण और निवारण के उपाय के प्रति सचेत हो। व्यक्ति अपने मन से भ्रमों को निकालकर खुल कर इन विषयों पर चर्चा कर सके। इस प्रकार अनेक भयावह परिणामों से वह स्वयं को बचाने में सक्षम हो पाए। इसके दुष्परिणामों से रोगी अपने परिवार को, समाज को बचा सकता है पर इसके लिए स्वस्थ दृष्टिकोण तथा सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों की समझ आवश्यक है। विजय की नासमझी दिखाकर लेखक ने इसी ओर ध्यान आकर्षित

किया है। अंत में अजय ने सावधानी के साथ जीने परंतु ज़िम्मेदारियों से न भागने का जो निष्कर्ष निकाला है, वही वास्तव में उचित जीवन-शैली है।

अनु भी अंत में जिस प्रकार स्वयं तथा होने वाले बच्चे के भविष्य को सँवारने का निश्चय कर, संघर्ष के लिए तत्पर हो उठती है, वह पाठकों को भी अस्तित्व-रक्षा की प्रेरणा देती है।

अनुराधा की सास के माध्यम से खोखली रूढ़िवादिता की सच्चाई को सामने लाया गया है तो उसके ससुर भी सच्चाई से भागते, पलायनवादी, पुरातन परंपरा के पुजारी नज़र आते हैं। दोनों ही अनुराधा की समस्याओं से अनभिज्ञ बने रहना चाहते हैं तथा उचित-अनुचित का निर्णय लेने में असमर्थ हैं।

इस प्रकार सभी पात्रों के माध्यम से किसी न किसी समस्या को उठाकर लेखक यह स्पष्ट कर देते हैं कि समस्याएँ हैं, कठिनाइयाँ हैं, सामाजिक अवरोध हैं किंतु इन सबके बीच में जो संघर्ष करते हुए जीना सीख गया है, वही सफल होने की उम्मीद भी कर सकता है तथा सफल भी हो सकता है अन्यथा आत्मदमन करके वह इस समाज में भली-भाँति नहीं जी सकता।

पाठगत प्रश्न 15.4

1. प्रस्तुत पाठ की वाक्य योजना प्रमुख रूप से किस प्रकार की नहीं है–

   (क) सरल (ख) कठिन (ग) लंबी (घ) जटिल

2. पाठ में किस प्रकार की शैली का प्रयोग न्यूनतम हुआ है–

   (क) प्रश्नात्मक (ख) संवादात्मक (ग) प्रतीकात्मक (घ) वृत्तात्मक

15.6 आपने क्या सीखा

1. 'अनुराधा' कहानी में नारी-मन की अंतर्व्यथा का चित्रण है।
2. परिवार में एक एड्स रोगी के होने से संबंधियों, माता-पिता, भाई-पत्नी आदि पर भी प्रभाव पड़ता है।
3. एड्स रोगियों की समयपूर्वक जाँच तथा सावधानी, समाज को इसके भयावह रूप से बचा सकती है।
4. किसी भी समस्या पर खुलकर चर्चा करने से हम अनेक विकट परिस्थितियों से बाहर आ सकते हैं।
5. नारी को अपनी शक्ति और अपने अस्तित्व का ज्ञान प्रारंभ से ही होना चाहिए ताकि वह विवेकपूर्ण निर्णय खुद ले सकें। समाज को भी इसमें पूर्ण समर्थन देना चाहिए।
6. कठिन परिस्थितियों, मुसीबतों से भागना उनसे बचने का उपाय नहीं है। संघर्ष कर उन्हें पराजित करना ही जीवन का लक्ष्य है।

7. समस्या प्रधान इस कहानी में अनेक शैलियों का सहारा लेकर पाठकों का ध्यान ऐसे एड्स रोगियों की ओर खींचा गया है जो सामाजिक उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं।

8. कहानी में हिंदी शब्द भंडार के तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द लिए गए हैं।

9. कहानी की भाषा सरल तथा पात्रानुकूल है।

10. भाव-बोध की दृष्टि से कहानी में गहराई है। एड्स रोग द्वारा उत्पन्न सामाजिक, मानसिक जैसी अनेक प्रकार की समस्याओं को उभारा गया है।

15.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

कहानी के लेखक श्री पंकज कुमार का जन्म 1 जून 1983 को हुआ। दर्शनशास्त्र में बी.ए. करने के उपरांत वह इसी विषय में एम.ए. कर रहे हैं। अपनी छोटी आयु में ही आपने उत्तराखंड सम्मान 2006 प्राप्त किया है। प्रस्तुत कहानी को युवा हिंदी कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित तथा साहित्य-अमृत पत्रिका के फरवरी 2006 के अंक में प्रकाशित किया गया है।

(ख) सरकार ने प्रत्येक ज़िले के सरकारी अस्पताल में एच.आई.वी. परीक्षण बी मुक्त जाँच की सुविधा उपलब्ध की है। अब तो एड्स रोगी सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं और एड्स रहित संतान सुख भोग रहे हैं।

(ग) अधिक जानकारी के लिए नेको की वेब साइट देखें जिसका पता है –

www.naco india.org.

रा.मु.वि.शि. संस्थान द्वारा निर्मित श्रवण कार्यक्रम 'स्वास्थ्य चिंतन' अध्ययन केंद्र पर जाकर सुनें तथा संस्थान की वेबसाइट अवश्य देखें – www.nios.org.

15.8 पाठांत प्रश्न

1. ''मैं जानता हूँ, मेरा रोग लाइलाज है।'' विजय का यह कथन क्या पूर्णतया सही है? वर्तमान खोजों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

2. अनुराधा की सास के चरित्र की कोई दो विशेषताएँ, उदाहरण सहित लिखिए।

3. ''इस सिनेमाई भाषा को अपने कॉलेज के भाषणों-बैठकों तक ही रखो, यहाँ मत बोलो।'' वाक्य किसने, किससे, कब और क्यों कहा?

4. आपको कथा में अनुराधा के अतिरिक्त कौन-सा पात्र सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

5. "डरकर ही आज मैं अपने समस्त भयों से मुक्त हो चुकी हूँ।" अनुराधा ने ऐसा क्यों कहा?

6. अनुराधा के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ उदाहरण सहित सिद्ध करते हुए लिखिए।

7. विजय को अधिक समय तक जीवित रखने के लिए परिवार को क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए थीं।

8. कहानी की भाषा-शैली पर सोदाहरण टिप्पणी लिखिए।

9. अनुराधा कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

10. 'अनुराधा' शीर्षक की उपयुक्तता पर विचार करते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

11. निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिए–

    (क) यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से ही आती है। निर्बल के लिए तो कर्त्तव्य और सिर्फ़ दायित्व ही आते हैं।

    (ख) भोक्ता तो भोक्ता, कर्त्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था।

12. निम्नलिखित पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग हुआ है। नाम लिखिए।

    (क) पर इसके लिए मैं अकेले इन्हें ही दोषी क्यों मानूँ?

    (ख) बाबूजी, मुझे अपना चेकअप कराना है।

    (ग) .....उफ, ये शहर की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ।

    (घ) गाँव-गँवई का पक्का मकान। बीच में आँगन, चौतरफ़ा बने कमरे तथा आँगन के चौतरफ़ा बड़े-बड़े गोल खंभोंवाले दोहरे बरामदे।

13. निम्नलिखित वाक्यों को अधूरा छोड़ दिया गया है। आप बताइए वक्ता कौन हैं तथा वे क्या कहना चाहती होंगी–

    (क) वे ही जानें कि कहाँ से ढोकर लाए थे यह बीमारी.....
    किसी सैलून में हजामत बनवाते वक्त या फिर.....?
    किसी डॉक्टर से सुई लगवाते समय या .....?

    (ख) अम्माजी शायद जगी हुई ही बैठी थीं.....
    'क्या हुआ?..... चला गया विजय?'

    (ग) मेरा बच्चा...! सब जान-बूझकर ..... मुझे या विजय को क्या अधिकार था?

15.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. भयमुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीने के लिए 5. (क) 6. 3-4-1-6-8-2-5-10-11-7-14-15-13-9-12

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) X (ख) X (ग) √ (घ) X (ङ) X

15.2 1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)

15.3 1. (घ) 2. (ग) 3. (ख)

15.4 1. (घ) 2. (ग)